शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

हिंदी उपन्यासों में रचनात्मक कार्यक्रम : एक विश्लेषण

श्रीमती अर्चना त्रिवेदी (शोधार्थी)
भाषा अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
डॉ पुष्पेंद्र दुबे (निर्देशक)
महाराजा रणजीत सिंह कॉलेज ऑफ़ प्रोफेशनल साईंसेस
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

साहित्य में समाज का प्रतिबिम्ब उपस्थित होता है। युग चेतना से संपृक्त साहित्य समाज की प्रवृत्तियों को उजागर करता है। साहित्यकार के लिए समाज की घटनाएं कच्चे माल के रूप में होती हैं, जिन्हें वह अपनी कल्पना शक्ति से कथानक में चित्रित करता है। हिंदी उपन्यासकारों ने देश और समाज को प्रभावित करने वाली स्थितियों को अपने उपन्यासों में अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी उपन्यासों में वर्णित रचनात्मक कार्यक्रम का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

साहित्य और समाज का अंतर्संबंध बहुत स्पष्ट है। साहित्य में समाज की चित्तवृत्तियां प्रतिबिम्बित होती हैं। साहित्यकार की कालप्रवाह को देखने की दृष्टि अलग होती है। वह आमजनजीवन में घुलामिला होने के बाद भी उससे असंपृक्त रहकर परिस्थितियों का आकलन करता है और अपने साहित्य में उन्हें अभिव्यक्त करता है। हिन्दी उपन्यास साहित्य अपनी विकास यात्रा में जिन मोड़ों से होकर गुजरा है, उसमें भारतीय स्वाधीनता संग्राम का एक लंबा कालखंड है। हिन्दी उपन्यासों में सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम से लेकर सन् 1947 में भारत के आजाद होने तक अनेक विचारधाराओं के उत्थान-पतन को अभिव्यक्ति मिली है। आजादी के बाद भी अनेक उपन्यासों में विचारों की प्रतिध्वनि सुनायी देती है। भारतेंदु काल के विभिन्न उपन्यासकारों ने आधारपीठिका तैयार की, परंतु उनके उपन्यास सामाजिक सरोकारों से बहुत दूर थे। मुंशी प्रेमचंद ने उपन्यास को सोद्देश्यता प्रदान की। उसे यथार्थ के धरातल पर उतारकर समाज के साथ उसका संबंध स्थापित किया। जब प्रेमचंद ने लिखना प्रारंभ किया, तब भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी का प्रवेश हुआ। भारत की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि होने से समाज ने गांधीजी के सत्य और अहिंसा के विचार को स्वीकार किया। मुंशी प्रेमचंद ने इस सूत्र को पकड़कर अपने उपन्यासों के कथानक में गांधी विचार को जगह दी। महात्मा गांधी ने अंग्रेजों से देश को आजाद कराने के लिए सत्याग्रह का शस्त्र दिया और देश के पुनर्निर्माण के लिए रचनात्मक कार्यक्रम का तानाबाना बुना।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

इन रचनात्मक कार्यक्रमों ने देश के लोगों में आत्मविश्वास का संचार किया। रचनात्मक कार्यक्रम सत्याग्रह का अभिन्न हिस्सा थे। दोनों के बीच सामंजस्य के साथ एक अदृश्य विभाजन भी था। सत्याग्रह राजनीति के अधिक निकट था और रचनात्मक कार्यक्रम समाज की पुनर्रचना से जुड़ा हुआ था। इसलिए जो कार्यकर्ता रचनात्मक कार्यक्रमों में संलग्न थे, उन्हें सत्याग्रह इत्यादि करके जेल जाने की मनाही थी। देश में नयी शक्ति का संचार करने की दृष्टि से गांधीजी ने वे कार्यक्रम उठाये, जो सीधे जनता के हृदय का स्पर्श करते थे। उनका अंतिम लक्ष्य गरीब से गरीब व्यक्ति की स्वतंत्रता था। महात्मा गांधी ने इसे अहिंसक पुरुषार्थ की उपाधि से विभूषित किया। हिन्दी उपन्यासों में इन रचनात्मक कार्यक्रमों को अभिव्यक्ति मिली है।

कौमी एकता

भारत के आजादी आंदोलन में हिंदू-मुस्लिम एकता सबसे बड़ी चुनौती रही। शांति और सद्भाव के लिए इसे मंजूर सब कोई करते हैं, परंतु समय आने पर इस बात को भूलने में देर नहीं लगाते। अंग्रेजों ने अनेक बार हिंदू-मुस्लिम एकता को नष्ट करने के प्रयास किए। सन् 1920 में गांधीजी ने कहा, "खिलाफत के प्रश्न को मैं सर्वोपरि स्थान देता हूं। असहयोग का शस्त्र भी उसे हम जिस रूप में जानते हैं, खिलाफत के प्रश्न पर विचार करते-करते हाथ लगा है। एक कट्टर हिंदू होने के नाते मुझे इस बात की बड़ी चिंता होती है। यदि सात करोड़ मुसलमानों से मैं अपने धर्म को सुरक्षित रखना चाहता हूं तो मुझे उनके धर्म को बचाने के लिए भी मरने को तैयार रहना चाहिए। यही बात हिंदुओं के लिए भी सही है। जब तक हिंदू-मुसलमान एक नहीं होते, तब तक स्वराज्य एक अर्थविहीन आदर्श है।...जब तक हिंदू और मुसलमानों के बीच सच्ची एकता स्थापित नहीं हो जाती, तब तक मैं दोनों से कहता हूं कि इस साम्राज्य को मिटाना असंभव है। सात करोड़ मुसलमान और तैंतीस करोड़ हिंदू एकता के सिवा किसी और तरह साथ नहीं रह सकते। हिंदू और मुसलमानों में जबानी नहीं दिली एकता होनी चाहिए। अगर ऐसा हो तो हम एक साल में स्वराज्य की स्थापना कर सकते हैं।"1

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास 'प्रेमाश्रम' में लिखते हैं, "हिंदू खुलेआम मुसलमानों के हाथ से और मुसलमान हिंदुओं के हाथ से पानी लेकर पी रहे थे। हिंदू-मुसलमान एकता इन जुलूसों का मुख्य नारा था।"2

उन्होंने 'कर्मभूमि' उपन्यास में अमरकांत और सलीम की दोस्ती का चित्रण किया है। लाला अमरकांत वैष्णव मत को मानने वाले हैं, परंतु अंत में उनका भी हृदय परिवर्तन होता है और वे सलीम के साथ बैठकर भोजन करते हैं। महात्मा गांधी जीवनभर दोनों धर्मों के झगड़ों को शांत कराते रहे। जब देश आजादी के जश्न में डूबा हुआ था, तब वे नोआखली में हुए भीषण दंगे की आग को बुझा रहे थे। कौमी एकता के बिना पूर्ण स्वराज्य का प्रकट होना नामुमकिन है।

अस्पृश्यता निवारण

अस्पृश्यता हिंदू धर्म का कलंक और शाप है। लाखों लोगों को सैकड़ों वर्षों तक उनके मूलभूत अधिकारों से वंचित रखना और उनके साथ गुलामों की तरह व्यवहार करना किसी प्रकार से न्याय नहीं कहा जा सकता। यह सब कुछ धर्म की आड़ लेकर किया गया। स्वतंत्रता आंदोलन में अस्पृश्यता निवारण महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्यक्रम बन गया। जब अंग्रेजों ने दलितों को अलग मताधिकार देने की बात कही, तब इसने

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

और गति पकड़ी। गांधीजी ने इस विचार के खिलाफ उपवास किया। पण्डित मदनमोहन मालवीय की अध्यक्षता में बम्बई में एक आमसभा हुई जिसमें अस्पृश्यता को दूर करने के लिए अखिल भारतीय अस्पृश्यता विरोधी संगठन खड़ा किया गया। श्री घनश्यामदास बिडला अध्यक्ष और अमृतलाल ठक्कर मंत्री चुने गए। यही संगठन बाद में 'हरिजन सेवक संघ' के रूप में काम करने लगा। दलित जातियों के संबंध में 1919 में ही प्रस्ताव पारित कर दिया गया था कि ''परंपरा से दलित जातियों पर जो रुकावटें चली आ रही हैं, वे बहुत दुःख देने वाली हैं और क्षोभकारक हैं, जिससे दलित जातियों को बहुत कठिनाइयों और असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए न्याय और भलमानसी का यह तकाजा है कि ये तमाम बंदिशें उठा दी जाएं।''3

प्रेमचंद के 'गबन' उपन्यास का पात्र रमानाथ का छुआछूत में विश्वास नहीं है। वह कलकत्ता में एक खटिक के यहां निवास करता है। वह खटिक जाति की बुढ़िया से कहता है, ''मैं तो तुम्हारी रसोई में खाऊंगा। जब मां-बाप खटिक हैं, तो बेटा भी खटिक है। जिसकी आत्मा बड़ी हो वही ब्राह्मण है।....आदमी पाप से नीच होता है, खाने-पीने से नहीं होता, प्रेम से जो भोजन मिलता है, वह पवित्र होता है। उसे तो देवता भी खाते हैं।''4

शराबबंदी

स्वराज्य की लड़ाई में शराबबंदी को विशेष स्थान प्राप्त था। जब गांधीजी ने असहयोग आंदोलन प्रारंभ किया तब शराब दुकानों पर धरना देना भी उसमें शामिल था। शराबखोरी देश के विकास के लिए सबसे बड़ी बाधा है और नैतिक दृष्टि से भयंकर पापकर्म है। गांधीजी का मानना है कि यदि हमें सच्चा स्वराज्य हासिल करना है तो अफीम, शराब वगैरा चीजों की व्यसन में फंसे हुए अपने करोड़ों भाई-बहनों के भाग्य को हम भविष्य में सरकार की मेहरबानी या मर्जी पर झूलता नहीं छोड़ सकते। राष्ट्रसेवकों का प्राथमिक कर्तव्य शराबबंदी है। ''अगर हम शराब और नशेबाजी के शिकार बने रहे, तो हमारी आजादी, खाली गुलामों की आजादी होगी।''5

'रंगभूमि' उपन्यास का पात्र सूरदास वास्तव में गांधीजी का प्रतिरूप है। वह नशे को देश के लिए घातक मानता है। एक स्थान पर वह कहता है, ''बजरंगी - मुझे जो घंटे भर के लिए राज मिल जाता, तो सबसे पहले शहर भर की ताड़ी की दुकानों में आग लगवा देता।''6

खादी

भारत ने दुनिया को वस्त्र विद्या प्रदान की। वैदिक ऋषि गृत्समद ने कपास की खोज की। उससे उन्होंने सूत कातना और बुनने की कला का विकास किया। अंग्रेजों के आगमन तक यहां की वस्त्र कला दुनियाभर में मशहूर थी। अमीर गरीब, महिला, पुरुष सभी चरखा चलाकर बुनकरों से कपड़ा बुनवा लिया करते थे। विकेंद्रित अर्थव्यवस्था भारत की असली ताकत थी। अंग्रेजों ने वस्त्र निर्माण और इसके आसपास खड़े हस्तोद्योग को नष्ट करना प्रारंभ किया। देश की जनता पूरी तरह से अंग्रेजों की गुलाम हो गई। अंग्रेज कच्चा माल इंग्लैंड ले जाने लगे और वहां से पक्का माल बनाकर भारत में भेजने लगे। इस शोषण को देखकर दादाभाई नौरोजी ने लिखा कि अंग्रेज ऐसी गाय है जो चारा भारत में खाती है और दूध इंग्लैंड में देती है। लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में स्वदेशी आंदोलन चलाया गया। इसमें इंग्लैंड से बनी हुई वस्तुओं के बहिष्कार की बात कही गयी, परंतु अन्य देशों की वस्तुओं को स्वीकार किया गया। जब महात्मा गांधी ने 'हिंद स्वराज' पुस्तक लिखी, तब उसमें चरखे का जिक्र

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

किया। लेकिन तब तक उन्होंने चरखा देखा तक नहीं था। जब गांधीजी भारत आए, तब उन्होंने देश-भ्रमण के दौरान भीषण गरीबी और दारिद्र्य को देखा। उन्होंने गुजरात के गांव में चरखे को खोज निकाला और उसीसे बने हुए वस्त्र पहनने का संकल्प लिया। गांधीजी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए चरखा और खादी पर बराबर जोर देते थे। उनका स्पष्ट मानना था कि भारत गांवों का देश है। ग्रामवासियों को खाली समय में काम देने का इससे बढ़कर सरल, सस्ता उपाय दूसरा नहीं हो सकता। महात्मा गांधी ने खादी को स्वराज्य के आंदोलन से जोड़ दिया। भारत में असहयोग आंदोलन प्रारंभ होने पर उन्होंने लिखा कि, ''हिंदुस्तान को अगर कोई दलील चरखे की तरफ खींच रही है तो वह है भूख। चरखे की पुकार दूसरी सब पुकारों से मधुर है क्योंकि यह प्रेम की पुकार है और प्रेम ही स्वराज्य है।..हमको भारत के उन लाखों-करोड़ों आदमियों की हालत पर अवश्य विचार करना चाहिए, जिनका जीवन पशु से भी गया बीता हो गया है, जो बिलकुल मरणोन्मुख हो रहे हैं। यह चरखा ही देश के उन लाखों भाइयों और बहनों के लिए एकमात्र संजीवनी बूटी है।''7

'कर्मभूमि' उपन्यास का पात्र अमरकांत अपने पिता से कहता है, ''चरखा रुपये के लिए नहीं चलाया जाता, बल्कि वह आत्मशुद्धि का साधन है।''8

अमरकांत ऐच्छिक दारिद्र्य को अपनाता है। उसके पास धन-संपत्ति की कमी नहीं है, परंतु अशुद्ध साधनों से अर्जित संपत्ति के उपयोग को वह गलत मानता है। स्वावलंबी जीवन ही श्रेष्ठ है। युवाओं को काम करके उपार्जन करने में शर्म नहीं आना चाहिए। ''अमर खादी बेच रहा है।...एक वकील साहब ने खस का पर्दा उठाकर देखा और बोले, ''यार, यह क्या गजब करते हो, म्युनिसिपल कमिश्नरी की तो लाज रखते, सारा भद्द कर दिया। क्या कोई मजूर नहीं मिलता था ?

अमर ने गट्ठा लिये-लिये कहा, ''मजूरी करने से म्युनिसिपल कमिश्नरी की शान में बट्टा नहीं लगता। बट्टा लगता है - धोखे-धड़ी की कमाई खाने से।''9

दूसरे ग्रामोद्योग

खादी के पूरक उद्योग धंधे दूसरे ग्रामोद्योग हैं। ग्रामीणों को रोजगार की तलाश में शहरों में न आना पड़े, इसकी मुकम्मल योजना खादी तथा ग्रामोद्योग में है। दूसरे धंधों के बिना गांव की आर्थिक रचना पूर्ण नहीं हो सकती। इसके लिए गांधीजी के सहयोगी जे.सी.कुमारप्पा ने ग्रामोद्योगों में अनेक प्रकार के संशोधन उपस्थित किए। गांव में बनने वाली वस्तुओं के उपयोग को आजादी आंदोलन के साथ जोड़ दिया गया। हाथ से बनी हुई वस्तुओं को विशेष महत्व मिला। आमजनता ने इन वस्तुओं के उपयोग को राष्ट्रभक्ति से जोड़ा और स्वयं को गौरवान्वित महसूस करने लगी। ग्रामीण सामाजिक जीवन को बनाने में इन ग्रामोद्योग की महत्वपूर्ण भूमिका थी। जीवन की आवश्यकताएं गांव में बनी वस्तुओं से पूरी की जाएं, ऐसा आग्रह रखा गया। इस विचार को भी मुंशी प्रेमचंद ने 'कर्मभूमि' उपन्यास में स्थान दिया है। किसी भी समाज में मुर्दा मांस खाना सबसे निकृष्ट माना जाता है। उपन्यास में चित्रित चर्मकारों की बस्ती के अनेक लोग पास के गांव से मृत गाय को अपने कंधों पर रखकर लाते हैं। इस दृश्य को देखकर अमरकांत गांव छोड़कर जाने लगता है। तब चैड़ी छाती वाला युवा चर्मकारों को समझाते हुए कहता है, ''मरी गाय के मांस में ऐसा कौन-सा मजा

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

रखा है, जिसके लिए सब जने मरे जा रहे हो। गड्ढा खोदकर मांस गाड़ दो, खाल निकाल लो। वह भी जब अमर भैया की सलाह हो। हमको तो उन्हीं की सलाह पर चलना है। उनकी राह पर चलकर हमारा उद्धार हो जाएगा। सारी दुनिया हमें इसीलिए तो अछूत समझती है कि हम दारू-शराब पीते हैं, मुर्दा-मांस खाते हैं और चमड़े का काम करते हैं। और हममें क्या बुराई है ? दारू-शराब हमने छोड़ ही दी - हमने क्या छोड़ दी, समय ने छुड़वा दी - फिर मुर्दा-मांस में क्या रखा है। रहा चमड़े का काम, उसे कोई बुरा नहीं कह सकता, और अगर कहे भी तो हमें उसकी परवाह नहीं। चमड़ा बनाना-बेचना कोई बुरा काम नहीं है।''10

यशपाल के 'देशद्रोही' उपन्यास के बद्री बाबू ग्रामोद्योग की स्थापना के लिए ग्रामोद्योग आश्रम बनाते हैं। उनका मानना है, ''भारत नगरों का नहीं ग्रामों का देश है। यदि भारत के ग्रामीण आत्मनिर्भर और स्वतंत्र हो जाएं तो देश की समस्याएं स्वयं ही हल हो जाएंगी। देश स्वतंत्र हो सकता है।''11

गांव की सफाई

जब महात्मा गांधी भारत आए तब उन्होंने सन् 1916 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में भाषण दिया। उन्होंने तभी भारत में व्याप्त गंदगी की ओर सभी का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि, ''अगर हमारे मंदिर कुशादगी और सफाई के नमूने न हों तो हमारा स्वराज्य कैसा होगा ?''12 गांधीजी ने आजादी की लड़ाई में सफाई को सबसे ऊपर रखा। शहर और गांवों में फैली गंदगी को देखकर वे दुःखी हो जाते। सफाई और सत्याग्रह को उन्होंने एक ही माना। इस बारे में रचनात्मक कार्यक्रम पुस्तिका में वे लिखते हैं, ''सभी गांव में घूमते समय जो अनुभव होता है उससे दिल को खुशी नहीं होती। गांव के बाहर और आसपास इतनी गंदगी होती है और वहां इतनी बदबू आती है कि अक्सर गांव में जाने वाले को आंखें मूंदकर व नाक दबाकर जाना पड़ता है।...हमने राष्ट्रीय या सामजिक सफाई को न तो जरूरी गुण माना और न उसका विकास ही किया। यों रिवाज के कारण हम अपने ढंग से नहा भर लेते हैं मगर जिस नदी, तालाब या कुएं के किनारे हम श्राद्ध या वैसी ही दूसरी कोई धार्मिक क्रिया करते हैं और जिन जलाशयों में पवित्र होने के विचार से हम नहाते हैं उनके पानी को बिगाड़ने या गंदा करने में हमें कोई हिचक नहीं होती। हमारी इस कमजोरी को मैं बड़ा दुर्गुण मानता हूं। इस दुर्गुण का ही यह नतीजा है कि हमारे गांव की हमारी पवित्र नदियों के पवित्र तटों की लज्जाजनक दुर्दशा और गंदगी से पैदा होने वाली बीमारियां हमें भोगनी पड़ती है।''

भीष्म साहनी के 'तमस' उपन्यास में आजादी के लिए बस्तियों में सफाई काम को महत्व दिया गया है। गरीबों को आजादी आंदोलन में शामिल करने के लिए उनके स्तर पर आना जरूरी था। सफाई कार्य और देशभक्ति एक-दूसरे के पूरक हैं। इसे समझाते हुए उपन्यास के पात्र बख्शीजी कहते हैं, ''क्या गरीबी में काम करने जाओगे तो पतलून पहनकर जाओगे ? झाड़ू लेकर या खादी पहनकर जाते हो तो लोग तुम्हें अपना समझते हैं।''13

नयी या बुनियादी तालीम

जब गांधीजी भारत आए तब वे कुछ समय के लिए रवींद्रनाथ टैगोर के शांति निकेतन में रहे। वहां पर उन्होंने विद्यार्थियों के बीच रहते हुए नयी तालीम का प्रयोग किया। जिसे देखकर रवींद्रनाथ टैगोर ने कहा कि यह स्वराज्य की चाबी है। महात्मा गांधी का शिक्षा के संबंध में

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्पष्ट मानना था कि, ''परदेशी हुकूमत चलाने वालों ने अनजाने ही क्यों न हो शिक्षा के क्षेत्र में अपने काम की शुरूआत बिना चूके बिलकुल छोटे बच्चों से की है। हमारे यहां जिसे प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है वह तो एक मजाक है। उसमें गांव में बसने वाले हिंदुस्तान की जरूरतों और मांगों का जरा भी विचार नहीं किया गया है। और वैसे देखा जाय तो उसमें शहरों का भी कोई विचार नहीं हुआ है। बुनियादी तालीम हिंदुस्तान के तमाम बच्चों को फिर गांव के रहने वाले हों या शहरों के हिंदुस्तान के सभी श्रेष्ठ और स्थायी तत्वों के साथ जोड़ देती है। यह तालीम बालक के मन और शरीर दोनों का विकास करती है। बालक को अपने वतन के साथ जोड़ रखती है। उसे अपने और देश के भविष्य का गौरवपूर्ण चित्र दिखाती है। और उस चित्र में देखे हुए भविष्य के हिंदुस्तान का निर्माण करने में बालक या बालिका अपने स्कूल जाने के दिन से ही हाथ बंटाने लगे, इसका इंतजाम करती है।''14

'कर्मभूमि' उपन्यास के पात्र डा॰.शांतिकुमार पेशे से प्राध्यापक हैं, परंतु उन्हें उस तालीम पर जरा भी भरोसा नहीं है। वह उसकी कमियों को जानते हैं और सलीम से कहते हैं, ''यह केराये की तालीम हमारे कैरेक्टर को तबाह कर डालती है। हमने तालीम को भी एक व्यापार बना लिया है। व्यापार में ज्यादा पूंजी लगाओ, ज्यादा नफा होगा। तालीम में भी खर्च ज्यादा करो, ज्यादा ऊंचा ओहदा पाओगे, मैं चाहता हूं, ऊंची-से-ऊंची तालीम सबके लिए मुआफ हो, ताकि गरीब-से-गरीब आदमी भी ऊंची-से-ऊंची लियाकत हासिल कर सबके और ऊंचे-से-ऊंचा ओहदा पा सके। युनिवर्सिटी के दरवाजे मैं सबके लिए खुले रखना चाहता हूं। सारा खर्च गवर्नमेंट पर पड़ना चाहिए। मुल्क को तालीम की उससे कहीं ज्यादा जरूरत है, जितनी फौज की।''15 वहीं अमरकांत भी पश्चिमी शिक्षा का विरोधी है। अमरकांत का विश्वास है कि, ''जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरूरत है, डिग्री की नहीं। हमारी डिग्री है - हमारा सेवा-भाव, हमारी नम्रता, हमारे जीवन की सरलता। अगर यह डिग्री नहीं मिली, अगर हमारी आत्मा जागरित नहीं हुई तो कागज की डिग्री व्यर्थ है।''16

स्त्रियां

किसी भी समाज की प्रगतिशीलता का पैमाना वहां की स्त्रियों की दशा को माना जाता है। प्राचीनकाल में भारत में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार प्राप्त थे। स्त्रियों ने भी वैदिक ऋचाओं की रचना कीं। कालांतर में महिलाओं को अनेक बंधनों में जकड़ दिया गया। वे अंधकार में डूब गयीं। पुनर्जागरणकाल में समाज सुधारकों ने महिलाओं की स्थिति पर ध्यान दिया और अनेक आंदोलन चलाए। जब महात्मा गांधी भारत आए, तब उनकी पत्नी कस्तूरबा के जीवन से अनेक महिलाओं को प्रेरणा मिली। सत्याग्रह के तरीके ने स्त्रियों को आजादी आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। सैकड़ों सालों से जिन्हें घर की चहारदीवारी से बाहर नहीं निकलने दिया गया हो, उन्हें सत्याग्रह ने जीवनदान दिया। गांधीजी ने स्त्री-पुरुष में भेदभाव न मानते हुए समानता की बात कही। गांधीजी को महिलाओं की अहिंसा शक्ति पर अधिक भरोसा था। स्त्रियों ने अपनी शक्ति को पहचाना नहीं और पुरुष ने स्त्री को अपना मित्र नहीं माना, बल्कि स्वामी मानकर व्यवहार किया। रचनात्मक कार्यक्रम में स्त्री शिक्षा और उनके जीवन स्तर को सुधारने के लिए अनेक बातों को शामिल किया गया। इसने गांधीजी को अपना सत्याग्रह कार्यक्रम आगे बढ़ाने में सहायता प्रदान की।

प्रेमचंद के 'सेवासदन' उपन्यास का पात्र पद्मसिंह कहता है, ''हमें उन वेश्याओं से घृणा करने का कोई अधिकार नहीं है, यह उनके साथ घोर अन्याय होगा, ये हमारी कुवासना, सामाजिक अत्याचार और कुप्रथाएं हैं, जिन्होंने वेश्या का रूप धारण कर लिया है, किस मुंह से घृणा करें?''17

आजादी आंदोलन में पुरुषों के समान स्त्रियों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। परंपरागत भारतीय समाज में स्त्रियों का बाहर निकलना आजादी आंदोलन की सबसे बड़ी सफलता है। सत्याग्रह वृत्ति अपनाने में स्त्रियां भी पीछे नहीं हैं। 'कर्मभूमि' उपन्यास के प्रारंभ में सुखदा विलासिनी है। लेकिन जब अमरकांत घर छोड़कर जाने की बात करता है, तब उसमें आश्चर्यजनक परिवर्तन होता है। वह कहती है, ''स्त्रियां अवसर पड़ने पर कितना त्याग कर सकती हैं, यह तुम नहीं जानते। मैं इस फटकार के बाद इन गहनों की ओर ताकना भी पाप समझती हूं, इन्हें पहनना तो दूसरी बात है। अगर तुम डरते हो कि मैं कल से ही तुम्हारा सिर खाने लगूंगी, तो मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूं कि अगर गहनों का नाम मेरी जबान पर आए, तो जबान काट लेना। मैं यह भी कहे देती हूं कि मैं तुम्हारे भरोसे पर नहीं जा रही हूं। अपनी गुजर भर को आप कमा लूंगी। रोटियों में ज्यादा खर्च नहीं होता। खर्च होता है आडम्बर में। एक बार अमीरी की शान छोड़ दो, फिर चार आने पैसे में काम चलता है।''18

आरोग्य के नियमों की शिक्षा

भारत में जैसे सफाई के प्रति जागरूकता का अभाव है, वैसे ही आरोग्य के नियमों की शिक्षा भी न के बराबर है। सभी को स्वास्थ्य की शिक्षा देने से अधिकांश रोगों को दूर किया जा सकता है। गांधीजी प्राकृतिक चिकित्सा के हिमायती रहे। उन्होंने न सिर्फ स्वयं पर, बल्कि अपने पुत्र, अपनी पत्नी और अन्य बीमारों की सेवा करते हुए प्राकृतिक चिकित्सा का उपयोग किया और अनेक असाध्य रोगों को ठीक किया। महात्मा गांधी को अनेक प्रकार की गंभीर बीमारियों ने घेरा, परंतु उन्होंने भोजन सुधार, उपवास और जल चिकित्सा, मिट्टी की पट्टी आदि से खुद को ठीक किया। उनका कहना था कि सत्याग्रही को बीमार होने का हक नहीं है। यदि बीमार हुए हैं तो उसका उपचार प्राकृतिक पद्धति से ही किया जाना चाहिए। अपने मन के विकारों को दूर करने से शरीर निरोग हो जाता है। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में मेल नर्स का काम किया और बोअर युद्ध के समय रेडक्रास की ओर से घायलों की सहायता की।

'रंगभूमि' उपन्यास के पात्र गांगुली वृद्ध हैं परंतु अदम्य उत्साह से आरोग्य समिति का संचालन करते हैं। सेवक को बीमार होने का अधिकार नहीं है। आत्मसंयम की नींव पर बनने वाला जीवन वृद्धावस्था तक आरोग्य के नियमों का पालन करता है। उसका जीवन प्रकृति के अनुसार चलता है। प्रेमचंद उनका चरित्र बताते हुए लिखत हैं ''जब व्यवस्थापक सभा के काम से अवकाश मिलता है, तो नित्य दो ढाई घंटे युवकों को शरीर-विज्ञान संबंधी व्याख्यान देते हैं। पाठ्यक्रम तीन वर्षों में समाप्त हो जाता है। तब सेवा-कार्य प्रारंभ होता है। अब की बीस युवक उत्तीर्ण होंगे और यह निश्चय किया गया है कि वे दो साल भारत भ्रमण करें, पर शर्त यह है कि उनके साथ एक लुटिया, डोर, धोती और कम्बल के सिवा और सफर का सामान न हो। यहां तक कि खर्च के लिए रुपये भी न रखे जाएं। इससे कई लाभ होंगे - युवकों को कठिनाइयों का अभ्यास होगा,

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

देश की यथार्थ दशा का ज्ञान होगा, धैर्य, साहस, उद्योग, संकल्प आदि गुणों की वृद्धि होगी।'19

प्रांतीय भाषाएं और राष्ट्रभाषा

अपनी भाषा के बारे में महात्मा गांधी के विचार बिलकुल स्पष्ट थे। दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए उन्होंने अपने बच्चों को गुजराती भाषा में शिक्षा प्रदान की। इस बारे में गिरिराज किशोर अपने उपन्यास 'पहला गिरमिटिया' में लिखते हैं, "गांधीजी ने पोलक से कहा, "दुनिया में ऐसा कोई समाज है जो अपनी भाषा त्याग कर दूसरी भाषा के माध्यम से उन्नति करने का सपना देखे ? जो ऐसा करता है वह मृगतृष्णा में जीता है। इन्हें पहले गुजराती जाननी होगी...। मैं गुलाम देश में पैदा हुआ। मैं अपने देश की भाषाओं को अंग्रेजी के मुकाबले पर खड़ा नहीं कर पा रहा हूं। वह उन्हें रौंधती हुई आगे बढ़ रही है। क्या मैं अपने घर में भी इस प्रयत्न को छोड़ दूं ?"20

भारत की आजादी और राष्ट्रीय एकता में हिन्दी भाषा महत्वपूर्ण कड़ी है। दक्षिण अफ्रीका से भारत आते ही महात्मा गांधी ने हिंदी, हिंदुस्तानी का नारा बुलंद किया। लखनऊ कांग्रेस में अंग्रेजी में भाषण चाहने वालों को गांधीजी ने कहा कि यदि आप एक वर्ष के भीतर हिन्दी नहीं सीख लेंगे, तो आपको मेरा भाषण अंग्रेजी में सुनने को नहीं मिलेगा। वाइसराय द्वारा बुलायी युद्ध परिषद में अकेले गांधीजी ने ही हिन्दी में बोलने का साहस किया। गांधीजी अंग्रेजी को मोहिनी कहते थे। काशी हिंदू विश्वविद्यालय में व्याख्यान देते हुए उन्होंने कहा कि बम्बई में हुए अधिवेशन में तमाम श्रोता केवल उन भाषणों से प्रभावित हुए जो हिन्दी में दिए गए थे।...यदि आप मुझसे कहें कि हमारी भाषा में उत्तम विचार अभिव्यक्त नहीं किए जा सकते, तब तो हमारा संसार से उठ जाना अच्छा है। क्या कोई व्यक्ति स्वप्न में भी यह सोच सकता है कि अंग्रेजी भविष्य में किसी भी दिन भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है ? जब तक हिन्दी भाषा में सारा सार्वजनिक कार्य नहीं होगा, तब तक देश की उन्नति नहीं हो सकती। जब गांधीजी इन्दौर आए तब एक प्रस्ताव द्वारा हिन्दी राष्ट्रभाषा मानी गयी।

किसान

भारत की अधिसंख्य आबादी गांवों में निवास करती है। इनमें भी किसानों की तादाद सबसे ज्यादा है। स्वराज्य की इमारत किसानों पर ही टिक सकती है। उन्हें यदि अपनी ताकत का अहसास हो जाए तो कोई भी हुकूमत उनके सामने नहीं टिक सकेगी। महात्मा गांधी ने चंपारण से अपने आंदोलन की शुरुआत की थी। सौ साल पहले की व्यवस्था को बिलकुल अहिंसक तरीके से तोड़ना कोई छोटी बात नहीं थी। इसमें बीस लाख किसानों ने भाग लिया। नील के धब्बे को मिटाने के लिए पहले खूनी संघर्ष हो चुके थे लेकिन गांधीजी के नेतृत्व में चले आंदोलन ने रुख बदल दिया। चंपारण के किसानों में राजनीतिक जागृति पैदा हुई। गांधीजी को किसानों पर अधिक भरोसा था। वह इसलिए कि किसानों को एक बार यह समझ आ जाए कि उनकी तकलीफों के लिए कौन जिम्मेदार है, फिर वे अहिंसा को समझकर उसे आजमा लेते हैं।

भगवतीचरण वर्मा के उपन्यास 'टेढ़े मेढ़े रास्ते' में गांव की समस्याओं को सुलझाने के लिए मार्कंडेय सत्याग्रह का रास्ता बताते हुए कहता है, "ये किसान वैसे ही कब भूखें नहीं मरते ? एक बार उनकी समझ में यह बात आ जाय कि इस पशुता की जिंदगी से मृत्यु अच्छी है तो सब कुछ संभव हो जाएगा। और साथ ही मैं तो यह कहता हूं कि सत्य और अहिंसा में इतना बल है कि बड़े से बड़े अत्याचार को दबा सकती है,

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

केवल मनुष्य में इस सत्य और अहिंसा पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए। तिवारीजी भी मनुष्य ही तो हैं, उनके पास भी हृदय है, करुणा है। ऐसी हालत में आप यह कैसे समझते हैं कि इस सत्य और अहिंसा का असर उन पर न पड़ेगा?''21

मजदूर

आजादी आंदोलन में ऐसे अनेक अवसर आए जब मजदूरों ने अपने अधिकार हासिल करने के लिए हड़ताल आदि का सहारा लिया। खासकर अहमदाबाद के मजदूर संघ को देशभर में अनुकरणीय माना गया। मजदूरों की दशा सुधारे बिना आजादी का कोई मतलब नहीं है। उन्हें जीवनोपयोगी सभी सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए। बिना किसी तरह का शोरगुल, धांधली या दिखावा किए ही उसकी ताकत बराबर बढ़ती गई है। उसका अपना अस्पताल है, मिल मजदूरों के बच्चों के लिए उसके अपने मदरसे हैं, बड़ी उमर के मजदूरों को पढ़ाने के क्लास हैं, उसका अपना छापखाना और खादी भंडार है और मजदूरों के रहने के लिए उसने घर भी बनवाये हैं। अहमदाबाद के करीब-करीब सभी मजदूरों के नाम मतदाताओं की सूची में दर्ज हैं और चुनावों में वे पुरअसर तरीके से हाथ बंटाते हैं।....यहां के मजदूरों और मालिकों ने अपने आपसी झगड़े मिटाने के लिए ज्यादातर अपनी राजीखुशी से पंच की नीति को स्वीकार किया है।

यशपाल के 'देशद्रोही' उपन्यास के बद्री बाबू कहते हैं, ''समाज के लिए मजदूर और मालिक दोनों ही आवश्यक हैं। मजदूरों के बिना मालिकों का निर्माण नहीं हो सकता। उनका विचार है कि ''मालिक मजदूर में श्रेणी हिंसा न होकर यदि प्रेम हो, मालिक अपने को मजदूर का रक्षक और पिता समझे तो उनमें द्वेष न होकर प्रेम होगा। उसमें झगड़े की गुंजाइश नहीं हो वही तो राम राज्य का आदर्श है।''22

इसी उपन्यास की बीवी राजदुलारी खन्ना अपने को मजदूरों के समकक्ष लाने के लिए झोपड़ी में ही रहने का निश्चय करती है।''23

विद्यार्थी

किसी भी देश को उसके विद्यार्थियों से काफी अपेक्षाएं होती हैं। देश निर्माण में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। आजादी आंदोलन में जब गांधीजी ने असहयोग का आह्वान किया तब हजारों की संख्या में विद्यार्थियों ने स्कूल-कॉलेज का बहिष्कार कर दिया। उनमें से कई दुबारा अपने स्कूल-कॉलेज में नहीं गए और सेवाकार्य में लग गए। इससे आंदोलन को आगे बढ़ने में सहायता मिली। गांधीजी अंग्रेजी शिक्षा पर निरंतर प्रहार करते रहे। वे इस शिक्षा को झूठा मोह मानते थे। पराई भाषा में ज्ञानार्जन कर विद्यार्थी अपने कीमती वर्ष ऐसे ही बरबाद कर देते हैं। इन विद्यार्थियों का अहिंसा की तरफ कोई खिंचाव नहीं है। गांधीजी ने अपनी युनिवर्सिटी की भूमिका प्रस्तुत करते हुए भरती संबंधी नियम जारी किए, जो इस प्रकार थे:

1 विद्यार्थियों को दलबंदीवाली राजनीति में कभी शामिल न होना चाहिए।

2 उन्हें राजनीतिक हड़तालें न करनी चाहिए।.....संस्था के अधिकारी विद्यार्थियों की बात न सुनें तो उन्हें छूट है कि वे उचित रीति से, सभ्यतापूर्वक, अपनी-अपनी संस्थाओं से बाहर निकल आयें और तब तक वापस न जाएं, जब तक संस्था के व्यवस्थापक पछताकर उन्हें वापस न बुलायें। किसी भी हालत में और किसी भी विचार से उन्हें अपने से भिन्न मत रखने वाले विद्यार्थियों या स्कूल-कॉलेज के अधिकारियों के साथ जबरदस्ती न करनी चाहिए। उन्हें यह

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

विश्वास होना चाहिए कि अगर वे अपनी मर्यादा के अनुरूप व्यवहार करेंगे और मिलकर रहेंगे तो जीत उनकी होगी।

3 सब विद्यार्थियों को सेवा की खातिर शास्त्रीय तरीके से कातना चाहिए। कताई के अपने साधनों और दूसरे औजारों को उन्हें हमेशा साफ-सुथरा सुव्यवस्थित और अच्छी हालत में रखना चाहिए। संभव हो तो वे अपने हथियारों, औजारों या साधनों को खुद ही बनाना सीख लें। अलबत्ता, उनका काता सूत सब से बढ़िया होगा। कताई संबंधी सारे साहित्य का उसमें छिपे आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक सब रहस्यों का उन्हें अध्ययन करना चाहिए।

4 अपने पहनने-ओढ़ने के लिए वे हमेशा खादी का ही उपयोग करें, और गांवों में बनी चीजों के बदले परदेश की या यंत्रों की बनी वैसी चीजों को कभी न बरतें।

5 वंदेमातरम गाने या राष्ट्रीय झण्डा फहराने के मामले में दूसरों पर जबरदस्ती न करें। राष्ट्रीय झण्डे के बिल्ले वे खुद अपने बदन पर चाहे लगायें, लेकिन दूसरों को उसके लिए मजबूर न करें।

6 तिरंगे झण्डे के संदेश को अपने जीवन में उतारकर दिल में सांप्रदायिकता या अस्पृश्यता को घुसने न दें। दूसरे धर्मोंवाले विद्यार्थियों और हरिजनों को अपने भाई समझकर उनके साथ सच्ची दोस्ती कायम करें।

7 अपने दुखी-दर्दी पड़ोसियों की सहायता के लिए वे तुरंत दौड़ जाएं, आसपास के गांवों में सफाई का और भंगी का काम करें और गांवों के बड़ी उमरवाले स्त्री-पुरुषों व बच्चों को पढ़ावें।

8 आज हिंदुस्तान का जो दोहरा स्वरूप तय हुआ है, उसके अनुसार दोनों शैलियों और दोनों लिपियों के साथ वे राष्ट्रभाषा हिंदुस्तानी सीख लें ताकि जब हिंदी या उर्दू बोली जाए अथवा नागरी या उर्दू लिपि लिखी जाए, तब उन्हें वह नयी न मालूम हो।

9 विद्यार्थी जो भी कुछ नया सीखें, उस सब को अपनी मातृभाषा में लिख लें और जब वे हर हफ्ते अपने आसपास के गांवों में दौरा करने निकलें, तो उसे अपने साथ ले जाएं और लोगों तक पहुंचाए।

10 वे लुक-छिपकर कुछ न करें, जो करें खुल्लम-खुल्ला करें। अपने हर काम में उनका व्यवहार बिलकुल शुद्ध हो। वे अपने जीवन को संयमी और निर्मल बनायें। किसी चीज से न डरें और निर्भय रहकर अपने कमजोर साथियों की रक्षा करने में मुस्तैद रहें और दंगों के अवसर अपनी जान की परवाह न करके अहिंसक रीति से उन्हें मिटाने को तैयार रहें। और जब स्वराज्य की आखिरी लड़ाई छिड़ जाए, तब अपनी संस्थाएं छोड़कर लड़ाई में कूद पड़ें और जरूरत पड़ने पर देश की आजादी के लिए अपनी जान कुरबान कर दें।

11 अपने साथ पढ़नेवाली विद्यार्थी बहनों के प्रति अपना व्यवहार बिलकुल शुद्ध और सभ्यतापूर्ण रखें।

मृदुला गर्ग के 'अनित्य' उपन्यास का पात्र अविजित अपने मित्र से कहता है, ''गांधीजी ने छुपकर काम करने को गलत बतलाया था। उन्होंने सभी भूमिगत विद्रोहियों को सलाह दी थी कि वह सरकार के आगे समर्पण कर दे।''24

अविजित गांधीजी द्वारा दिए गए सिद्धांतों को दोहराते हुए कहता है, ''उन्हें आत्मत्याग और स्वेच्छापूर्वक ग्रहण की गयी दरिद्रता की कला और सुंदरता को समझना होगा या उन्हें राष्ट्रीय निर्माण के कार्य में लग जाना चाहिए, उन्हें स्वयं हाथ से कात बुनकर खद्दर का प्रचार करना चाहिए। उन्हें जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक दूसरे

के साथ निर्दोष संपर्क स्थापित करके लोगों के हृदयों में सांप्रदायिक एक्य का बीज होना चाहिए। स्वयं अपने उदाहरण द्वारा अस्पृश्यता का प्रत्येक रूप में निवारण करना चाहिए और नशेबाजों के साथ संबंध स्थापित करके अपने आचरण को पवित्र रखकर मादक चीजों के त्याग का प्रसार करना चाहिए। यह सेवाएं हैं जिनके द्वारा गरीबों की तरह निर्वाह हो सकता है जो लोग गरीबी में न रह सकते हो ,उन्हें छोटे राष्ट्रीय धंधों में पड़ जाना चाहिए जिससे वेतन मिल जाए।''25

आर्थिक समानता

जब से अर्थव्यवस्था में बाजार का तत्व दाखिल हुआ है, तब से पूंजी और मजदूरी का झगड़ा और संघर्ष बढ़ गया है। प्राचीनकाल से आर्थिक समानता के संबंध में अनेक विचार व्यक्त किए गए। गांधीजी ने इस संबंध में 'ट्रस्टीशिप' का विचार रखा। धनवानों को उन्होंने सम्पत्ति का मालिक न मानते हुए 'ट्रस्टी' माना। जमनालाल बजाज ने स्वयं को इस कसौटी पर सिद्ध किया। गांधीजी का मानना था कि दुनिया की अर्थरचना ऐसी हो जिसमें किसी को भी अन्न और वस्त्र के अभाव की तकलीफ न सहनी पड़े। उनकी दृष्टि में आर्थिक समानता अहिंसापूर्ण स्वराज्य की मुख्य चाबी है। आजादी आंदोलन में अनेक लोगों ने विचारपूर्वक ऐच्छिक दारिद्र्य को अपनाया। धनवान होने के बाद भी स्वयं को संपत्ति का ट्रस्टी माना और आजादी आंदोलन में सभी प्रकार से सहायता प्रदान की। यह विचार सत्याग्रह की श्रेणी में ही आता है। गांधीजी ने पूंजी को दोषी न मानते हुए उसके दुरुपयोग की ओर संकेत किया। आर्थिक समानता स्थापित होने पर ही अहिंसक समाज रचना बनेगी।

मुंशी प्रेमचंद के 'कर्मभूमि' उपन्यास में रेणुका को प्रारंभ में अपने धन का बहुत घमंड रहता है। बाद में उसकी भी गांधी विचार पर आस्था बढ़ जाती है। जब डा॔.शांतिकुमार अपना आश्रम चलाने के लिए रेणुका के पास रुपया मांगने जाते हैं, तब रेणुका कहती है, ''अगर आप कोई ट्रस्ट बना सकें, तो मैं आपकी कुछ सहायता कर सकती हूं। बात यह है कि जिस सम्पत्ति को अब तक संचती आती थी, उसका अब भोगनेवाला नहीं है।...मुझे आप गुजारे के लिए सौ रुपये महीने ट्रस्ट से दिला दीजिएगा।''26

रेणुका भी रचनात्मक कार्य की ओर अग्रसर हो जाती है। वह कहती है, ''मंदिर तो यों ही इतने हो रहे हैं कि पूजा करने वाले नहीं मिलते। शिक्षादान महादान है और वह भी उन लोगों में, जिनका समाज ने हमेशा बहिष्कार किया हो।....ट्रस्ट बनाना पहला काम है। मुझे अब कुछ नहीं पूछना है! आपके ऊपर मुझे पूरा विश्वास है।''27

निष्कर्ष

हिन्दी उपन्यासों में रचनात्मक कार्यक्रमों का व्यापक रूप से चित्रण किया गया है। स्वाधीनता आंदोलन और उसके बाद लिखे गए उपन्यासों में इनकी चर्चा की गयी है। ये रचनात्मक कार्यक्रम कथानक में गूंथ दिए गए हैं। यथार्थ के धरातल पर उतरकर देखने से इन रचनात्मक कार्यक्रमों का महत्व समझ में आ जाता है। राष्ट्र निर्माण के लिए इनकी प्रासंगिकता असंदिग्ध है।

संदर्भ ग्रंथ

1 बापू-कथा, हरिभाऊ उपाध्याय, पृष्ठ 19-20
2 प्रेमाश्रम, प्रेमचंद पृष्ठ15-16
3 बापू-कथा, हरिभाऊ उपाध्याय, पृष्ठ 125
4 गबन, मुंशी प्रेमचंद पृष्ठ 133
5 बापू-कथा, हरिभाऊ उपाध्याय, पृष्ठ 199

6 रंगभूमि, प्रेमचंद, पृष्ठ 25
7 बापू-कथा, हरिभाऊ उपाध्याय, पृष्ठ 35
8 कर्मभूमि मुंशी प्रेमचंद पृष्ठ 12
9 कर्मभूमि मुंशी 5प्रेमचंद, पृष्ठ 91
10 कर्मभूमि, मुंशी प्रेमचंद पृष्ठ 125
11 देशद्रोही, यशपाल, पृष्ठ 96
12 बापू-कथा, हरिभाऊ उपाध्याय, पृष्ठ 7
13 तमस, भीष्म साहनी, पृष्ठ 51
14 रचनात्मक कार्यक्रम, अनु. काशिनाथ त्रिवेदी, पृष्ठ
15
15 कर्मभूमि, मुंशी प्रेमचंद पृष्ठ 57
16 कर्मभूमि, मुंशी प्रेमचंद पृष्ठ 78
17 सेवासदन, मुंशी प्रेमचंद पृष्ठ
18 कर्मभूमि, मुंशी प्रेमचंद पृष्ठ 85
19 रंगभूमि, प्रेमचंद, पृष्ठ 91
20 पहला गिरमिटिया, गिरिराज किशोर, पृष्ठ 614
21 टेढ़े मेढ़े रास्ते, भगवतीचरण वर्मा, पृष्ठ 213
22 देशद्रोही, यशपाल पृष्ठ 46
23 देशद्रोही, यशपाल पृष्ठ 65
24 अनित्य, मृदुला गर्ग़ पृष्ठ 113
25 अनित्य, मृदुला गर्ग़ पृष्ठ 131
26 कर्मभूमि, मुंशी प्रेमचंद पृष्ठ 166
27 कर्मभूमि, मुंशी प्रेमचंद पृष्ठ 167